मीर साहब की ईद

(गोला छूटने की आवाज़ और उसी के साथ एक आम शोरो-ग़ुल और 'चाँद हो गया चाँद हो गया !' की सदाएँ। यकायक मीर साहब की मुलाज़िमा दौड़ी हुई आती है और मीर साहब को ख़बर देती है।)

गुलशन—मियाँ, मियां तसलीम ! बीवी, बीवी तसलीम !

मीर साहब—क्या चाँद हो गया ?

गुलशन—जी हाँ मियाँ, मैने ख़ुद देखा बहुत बारीक है। मियाँ तसलीम !

पत्नी—कहाँ है, किधर है ? मुझे तो सूझता नहीं।

मीर साहब—अरी गुलशन, ज़रा मेरी ऐनक तो देना।

गुलशन—लीजिए मियाँ, वह है खजूर के ऊपर मस्जिद के दोनों मीनारों के बीच में।

मीर साहब—लाहौल वला क़ूवत, यह तो पढ़ने की ऐनक है इससे चाँद क्या दिखाई देगा !

पत्नी—हाँ हाँ, मैंने देख लिया। गुलशन, ज़रा नन्हें को ला मैं उसकी सूरत देखूँगी।

गुलशन—बीवी, नन्हें मियाँ को तो घसीटे ले गया है चाँद दिखाने। आप मेरी सूरत देख लीजिये ना।

बीवी—चल, दूर हट यहाँ से ! ऐ जी सुनते हो, ज़रा तुम हँसती हुई सूरत बनाओ तो मैं तुम्हारा मुँह देखूँ।

मीर साहब—यानी मैं। वल्लाह है कि मैं तो यूँ ही हँसमुख हूँ, तुम शौक़ से मेरी सूरत देखो। मगर मुझे भी तो चाँद दिखाओ।

पत्नी—देखो जी मैंने चाँद देखकर तुम्हारा मुँह देखा है। देखूँ यह महीना कैसा भागवान गुज़रता है।

मीर साहब—मगर वह चाँद है किधर ?

पत्नी—वह देखो, उँगली की सीध में खजूर के बिल्कुल ऊपर।

मीर साहब—अच्छा, हाँ ठीक है। मगर वह खजूर किधर है?

पत्नी—बस, तो तुम देख चुके चाँद।

[लड़का दौड़ता हुआ आता है।]

लड़का—अब्बा, अब्बा! अम्मा, अम्मा!

पत्नी—लो मेरा चाँद भी आ गया।

लड़का—अम्मा, मैंने चाँद देख लिया। अब्बा, वह बहुत दूर है। आपने देखा, वह देखिये।

मीर साहब—अरे तो तुझ ही को क्यों न देख लूँ, तू भी चाँद है।

पत्नी—मेरा चाँद!

लड़का—तो अम्मा, कल ईद है ना?

पत्नी—हाँ मेरे चाँद, कल ईद है। मेरा चाँद ईदगाह जायेगा, वहाँ से खिलौने, मिठाइयाँ और न मालूम क्या-क्या लायगा।

मीर साहब—मगर बेगम, मेरे कपड़े-वपड़े अभी निकाल कर रख दो। ऐसा न हो कि देर हो जाय।

लड़का—और अम्मा मेरे कपड़े भी।

मीर साहब—हाँ साहब, मेरे बेटे के कपड़े सबसे पहले निकालो।

गुलशन—बीवी, मैं ज़रा अपना दुपट्टा रँग लूँ।

पत्नी—हाँ और क्या? तेरी ईद सबसे ज्यादा ज़रूरी है।

गुलशन—ऐ वाह बीबी, तो क्या मेरे दिल ही नहीं है?

मीर साहब—नहीं साहब, है क्यों नहीं। सबसे बड़ा तो तेरा ही दिल है। मगर सुन तो सही नेकबख्त, कहीं मेरे नहाने का पानी तैयार करने में देर न कर देना। और देखो बेगम, मुझको ज़रा जल्दी उठाना।

पत्नी—तुम उठ चुके सवेरे।

मीर साहब—भला कोई बात भी हो, आखिर क्यों न उठूँगा मैं। अच्छा तो यूँ सही कि मैं तुमको उठाऊँगा।

पत्नी—कहीं उठाया न हो। मैं न उठाऊँ तो शायद तुम दो-तीन दिन तक सोकर न उठो।

मीर साहब—भई वल्लाह, यह भी एक ही रही। मैं दिन चढ़े तक सोता जरूर हूँ। मगर कल ईद भी तो है।

पत्नी—अच्छा देखूं, तुम मुझे उठाते हो या मैं तुमको।

मीर साहब—रही सेर-सेर भर इमरतियों की शर्तं। मगर नहाने का पानी, कपड़े और जूता वग़ैरा सब तैयार रहे सवेरे।

लड़का—और अम्मा मेरा जूता ?

मीर साहब—अरे हाँ बेटा, जरा मुझे तो अपना नया जूता दिखादे।

लड़का—ले आऊँ उठाकर ?

मीर साहब—और नहीं तो क्या। मैंने देखा ही नहीं अपने बेटे का जूता।

पत्नी—जा, बेटा जा। लाके दिखादे अपने अब्बा को।

मीर साहब—लल्लू की मा, कहीं ऐसा न हो कि यह कमबख्त गुलशन सुबह पानी तैयार न करे। जरा तुम खु़द ताकीद कर देना। और हाँ, मेरी वह जामावार की नई शेरवानी तो तुम इसी वक़्त निकाल कर रखदो।

पत्नी—अब इस वक़्त तो मुझसे कुछ न होगा। रोजा खोल के यूँ ही हाथ-पैर सनसना रहे हैं।

मीर साहब—कहीं सुबह यह न कहो कि हाथ-पैर फुलाये देते हो। बात यह है कि जरा जल्दी ही जाना चाहिये।

पत्नी—हाँ, हाँ सवेरे जब सब चीजें तुमको तैयार न मिलें तब ही कहना। मैं तो कहती हूँ कि तुम्हारा इतने सवेरे उठना ही मुश्किल है।

मीर साहब—फिर वही। यानी मैं क्या इतना भी नहीं जानता कि कल ईद है। जरा तड़के उठना चाहिये।

लड़का—अब्बा, यह देखिये जूता। इसमें मैंने डोरी डाल दी है।

मीर साहब—भई वाह वाह ! मगर सवेरे जल्दी से उठकर तैयार भी हो जाना नहीं तो ईदगाह कैसे चलोगे ?

पत्नी—वह तो यूँ ही अँधेरे मुँह उठता है।

मीर साहब—मगर इसे भी ज़रा जल्दी तैयार कर देना। ऐसा न हो कि मेरे साथ ईदगाह न जा सके।

पत्नी—अच्छा, अच्छा तैयार हो जायगा। मगर अब इससे कहो कि आज जल्दी सो रहे, तड़के उठना भी तो है।

मीर साहब—मैं तो तुमसे भी यही कहता हूँ।

पत्नी—अच्छा, ख़ैर, तुम सो रहो। मैं भी दरवाज़ा बन्द कराके लेटती ही हूँ।

मीर साहब—मगर गुलशन से ज़रा सवेरे उठने की ताकीद कर देना और घसीटे से भी कहलवादो कि कल ईद है, ज़रा तड़के तैयार हो जाये। बच्चे का साथ होगा, उसे भी तो साथ ले जाऊँगा ना।

पत्नी—अच्छा, मैं सबसे कहलवा दूँगी। तुम अब लेट जाओ।

[थोड़ा अवकाश, फिर कुछ ख़र्राटों की आवाज़ें। रात्रि का वातावरण, पहरेदारों की आवाज़ें, कुत्तों के भौंकने की आवाज़ें। सुबह के समय मुर्ग़ा बाँग देता है और मीर साहब की पत्नी उनको जगाती हैं।]

पत्नी—ऐ मैं कहती हूँ कि अब भी उठोगे या बरस-बरस के दिन भी बस पड़े हुए ऐंढा करोगे। रात को तो इतनी तैयारियाँ थीं और इस वक़्त उठने का नाम ही नहीं लेते।

मीर साहब—लाहौल वला क़ूवत। क्या ख़्वाब था। सोना दुश्वार कर दिया है। कैसा अच्छा ख़्वाब था।

पत्नी—ऐ चूल्हे में गया तुम्हारा दुपहरिया का ख़्वाब मुआँ। अब ईदगाह भी जाओगे या बस पड़े ही रहोगे ?

मीर साहब—यानी ईदगाह ? भई इस क़दर तड़के, आख़िर होगा

कौन ? अभी तो कोई सोकर भी न उठा होगा। तुम तो वल्लाह है कि लल्लू की मा कमाल करती हो।

पत्नी—तुम ही ने तो कहा था कि तड़के उठा देना।

मीर साहब—मगर मैंने यह कब कहा था कि एक सिरे से सोने ही न देना, और आधी रात को उठा देना।

पत्नी—साढ़े सात बजने को आये, तमाम धूप फैल रही है यह। तुम्हारे यहाँ होगी आधी रात। अच्छा अब उठो।

[लड़का दौड़ता हुआ आता है।]

लड़का—अम्मा, क्या अब्बा अभी तक नहीं उठे ?

मीर साहब—अरे तू, भई उठ बैठा इतनी जल्दी।

लड़का—मैं तो नहा भी चुका। मैंने तो कपड़े भी बदल लिये। नया जूता भी पहन लिया। नई टोपी भी पहन ली।

मीर साहब—अरे, अरे अरे! देखूँ तो तुझे, और क्या तू इतने सवेरे नहाया है ? क्या लल्लू की मा इतने सवेरे तुमने इसे पानी से नहलाया है ?

पत्नी—नहीं, चाय से नहलाया है। अल्लाह न करे कि वह तुम्हारा ऐसा हो कि पानी से भागे और नहाने से डरे।

लड़का—अब्बा, तो अब चलिये न ईदगाह, बड़ी देर हो गई।

मीर साहब—नहीं बेटा, अभी तो बहुत जल्दी है। ज़रा धूप और फैल जाये तो मैं लिहाफ़ से निकलूँ।

लड़का—सब लोग ईदगाह जा रहे हैं।

मीर साहब—जाने दे बेटा, उन सबको, ईदगाह में बैठकर ये सब सर्दी खायेंगे।

पत्नी—अच्छा तो अब उठो भी। तुमको भी तो तैयार होना है।

मीर साहब—हाँ साहब, उठना तो है ही। मगर क्या ईद की ख़ुशी में आज हुक़्क़ा भी ग़ायब ?

पत्नी—हुक़्क़ा मुआँ तो नहीं मालूम कबसे भरा हुआ रखा है जल भी गया होगा।

मीर साहब—[हुक़्क़ा पीकर] ऐ, यह तो मुद्दतें हुईं जल चुका। शायद रात ही को भरवाकर तुमने रख दिया था।

पत्नी—अच्छा तो अब दूसरा हुक़्क़ा भरवाये देती हूँ, मगर तुम अब उठो।

[लड़का खिड़की के बाहर झाँककर देखता है और मीर साहब के कमरे में ट्राफ़िक की आवाजें आती हैं। लारियाँ, मोटरें, ताँगे सब ईदगाह की ओर जा रहे हैं। ताँगे वाले और लारी वाले सब शोर मचा रहे हैं: 'ईदगाह एक सवारी! ईदगाह एक सवारी। दो आने सवारी!' लड़का वहीं से कहता है।]

लड़का—देखिये, सब चले जा रहे हैं। वह शद्दू के अब्बा शद्दू को लेकर गये। और हमीद भी जा रहा है। सब जा रहे हैं। अब्बा अब उठिये।

पत्नी—अब मैं खेंचती हूँ तुम्हारा लिहाफ़।

मीर साहब—देखो बेगम, तुम्हें मेरी क़सम। यह गजब न करना। लिहाफ़ से रफ़्ता-रफ़्ता निकलने का आदी हूँ, वर्ना अब तक फ़ालिज में मर चुका होता।

पत्नी—दूर पार! क्या मुई ज़बान है, बरस-बरस के दिन भी यह बदशुगनी।

[फिर कुछ ट्राफ़िक की आवाज़. लड़का फिर कहता है।]

लड़का—वह तीन मोटर गये। अब्बा, उठिये अब।

मीर साहब—अरे तो जाने दे मोटरों को, तू क्या ठेकेदार है सबका? बहुत से लोग रात ही को चले गये होंगे ईदगाह।

पत्नी—बस तुम पड़े-पड़े बातें बनाये जाओ और बिस्तर न छोड़ो। जा चुके तुम ईदगाह।

मीर साहब—यह कैसे हो सकता है ? अच्छा यह बताओ कि लिहाफ़ के बाहर मौसम कैसा है ?

पत्नी—चलो हटो न, सर्दी न कुछ। अब तुम सर्दी को देखोगे तो जा चुके।

मीर साहब—खैर, जाना तो है ही मगर सर्दी का खयाल भी करना ही पड़ता है।

पत्नी—अच्छा तो तुम लेटे हुए सर्दी का ख़याल किये जाओ।

मीर साहब—नहीं साहब, मैं उठता तो हूँ ही। मगर वह हुक़्क़ा क्या हुआ आख़िर ?

पत्नी—[आवाज़ देती है] गुलशन, अरी ओ गुलशन !

गुलशन—ला रही हूँ बीवी हुक़्क़ा।

मीर साहब—बस हुक़्क़ा आया नहीं कि मैं उठा। मुझे भी अब कोई देर है।

गुलशन—लीजिये हुक़्क़ा। अरे मियाँ तो अब तक लेटे हैं और ग़ुसलख़ाने में पानी रखा हुआ ठण्डा हो रहा है।

मीर साहब—अरे तो क्या नेकबख़्त तूने यह समझा था कि मैं इस सर्दी में इस वक़्त अँधेरे मुँह उठकर नहाऊँगा।

पत्नी—अच्छा तो क्या आज ईद के दिन भी न नहाओगे ? ऐ मैं कहती हूँ कि तुमको आख़िर हुआ क्या है ?

मीर साहब—भई यह कौन कहता है कि नहाऊँगा नहीं, मगर इस सर्दी में और इस वक़्त बेगम तुम ख़ुद ग़ौर करो। [हुक़्क़ा पीते हैं।]

पत्नी—अच्छा नहाओ या न नहाओ मैं कुछ नहीं जानती। तीन महीने से नहाये नहीं थे, मैं समझती थी कि ईद के बहाने नहा भी लेंगे।

मीर साहब—हाँ साहब, नहाऊँगा। और ज़रूर नहाऊँगा। मगर इसमें क्या हर्ज है कि ईदगाह से वापस आकर ज़रा इत्मिनान से दिल लगाकर नहाऊँगा।

पत्नी—और बग़ैर नहाये तुम ईदगाह भी हो आओगे ?

मीर साहब—यह तो ठीक है, मगर देर भी तो होगी।

पत्नी—तोबा है अगर आज ज़रा जल्दी नहालोगे तो तुम्हारी इज़्ज़त में बट्टा लग जायगा।

[लड़का फिर खिड़की के पास से कहता है।]

लड़का—सब जा चुके, अब कोई नहीं जा रहा है।

मीर साहब—तो फिर अब हम जायेंगे अपने बेटे को लेकर।

पत्नी—अच्छा उतारो अब लिहाफ़ नहीं तो मैं अब खेंचती हूँ।

मीर साहब—लिहाफ़ तो कब का उतर चुका होता, मगर इस सर्दी में नहाने का जिक्र करके तुमने लिहाफ़ को और मेरे जिस्म से चिमटा दिया है।

पत्नी—अच्छा तो लो। [लिहाफ़ खेंचती है।]

मीर साहब—अरे, अरे, अरे, अरे। तुम्हें वल्लाह, तुम्हें मेरी क़सम। यह न करना वल्लाह है कि सर्दी लग जायेगी। छींकें आने लगेंगी। मैं खुद अभी उतारे देता हूँ तुम छोड़ो तो सही।

पत्नी—अच्छा तो उठो अब तुम खुद।

मीर साहब—बस अभी उठा। ऐसे मज़े में इस वक्त हुक़्क़ा आ रहा है कि छोड़ने को जी नहीं चाहता।

पत्नी—ऐ आग लगे इस मुए हुक़्क़े को।

मीर साहब—हुक़्क़ा और आग भई वाह वाह वाह ! क्या बात कही है ! चश्मे-बद दूर ये ही तो बातें हैं तुम में लल्लू की माँ।

पत्नी—देखो, मैंने कह दिया है कि तुम इस वक़्त मुझको जलाओ नहीं।

मीर साहब—अहा हा ! हुक़्क़ा-आग और फिर जलाओ नहीं। वल्लाह है लल्लू की मा तुम तो शाइर होती जाती हो।

लड़का—[ठुनकता है] अब्बा, ऊँह, हुँह, हुँह।

पत्नी—बरस-बरस के दिन बच्चे को रुलवा रहे हो। ना मेरा चाँद, तू अपना दिल न कुढ़ा। यह न गये तो मैं तुझको घसीटे के साथ भेज दूँगी।

मीर साहब—भई वल्लाह है कि क्या तरकीब सोची। बहुत ख़ूब, अगर यही है तो फिर मुझको इस सर्दी में इस क़दर नावक़्त क्यों लिहाफ़ से निकालोगी।

पत्नी—वह तो तुम ख़ुदा से चाहते हो कि किसी तरह इस वक़्त ईदगाह का जाना टल जाय। मगर मैंने भी कह दिया है कि अगर आज नन्हे को लेकर ईदगाह न गये तो अच्छा न होगा। अल्लाह रखे जिसका बाप हो वह नौकरों के साथ ईदगाह जाये।

मीर साहब—तो यह किसने कहा है कि ईदगाह न जाऊँगा; अलबत्ता ज़रा देर-सवेर का ख़याल है।

पत्नी—देख रहे हो कि वह खड़ा हुआ कैसा बिसूर रहा है।

मीर साहब—वह तो है गधा, मैं बस उठा अब।

पत्नी—बस उठा, बस उठा। नौ बजने को आये और इनका 'बस उठा' है कि किसी तरह ख़त्म ही नहीं होता।

मीर साहब—अच्छा तो यह बताओ कि लिहाफ़ उतारकर उठने की क्या ज़रूरत है। लिहाफ़ ओढ़कर क्यों न उठूँ।

पत्नी—और लिहाफ़ ओढ़ कर नहा भी लेना।

मीर साहब—हा-हा-हा! तुम तो ख़ुश मज़ाक़ी कर रही हो और मैं देखता हूँ कि सर्दी वाक़ई बहुत है।

पत्नी—हाँ बस, एक इनके लिए सर्दी है और तो कोई आदमी ही नहीं है।

लड़का—ऊँह-उहँ-हुँह-हुँह!

पत्नी—ना मेरे चाँद ना, बरस-बरस के दिन रोना नहीं।

मीर साहब—इसको सर्दी लग रही होगी। खिड़की खोले हवा में खड़ा है।

पत्नी—ना कहीं सर्दी लग रही है ; ईदगाह जाने के लिए बेक़रार है।

मीर साहब—कमाल करती हो बेगम तुम, यानी अभी लिहाफ़ का ज़रा-सा कोना हट गया था तो मालूम हुआ कि बर्फ़ का तूफ़ान लिहाफ़ के अन्दर घुस आया और तुम कहती हो कि इसको सर्दी नहीं लग रही है। इसे जरूर सर्दी लग रही है। क्यों बेटा लग रही है ना ?

लड़का—सर्दी कहाँ है जो लगे ? आप तो चलते ही नहीं ईदगाह। ऊँ, ऊँ, ऊँ।

पत्नी—तुम इस वक़्त इसको रुलाओगे और देख लेना कि अगर आज वह रोया तो मैं भी जमीन-आसमान एक कर दूँगी। वाह यह भी भला कोई बात है ?

मीर साहब—अरे साहब, तुमको तो जैसे कुछ इस वक़्त मुझसे ज़िद-सी हो गई है। अच्छा लाओ जरा कोई चादर और दो तो उठूँ मैं।

पत्नी—तौबा है, लो चादर भी लो, मगर तुम उठ तो चुको किसी तरह।

मीर साहब—[उठते हुए] उफ़, उफ़—उफ़ ! किस क़यामत की सर्दी है। वल्लाह है कि दाँत से दाँत बजे जाते हैं ?

पत्नी—अरे और क्या न दिसंबर न जनवरी, और इनके दाँत अभी से बजने लगे।

मीर साहब—तो गोया मैं झूठ बोल रहा हूँ। तुमको क्या मालूम कि नक़ली दाँत नवम्बर ही से बजना शुरू हो जाते हैं।

पत्नी—अच्छा तो अब बजा भी चुको अपने दाँत और किसी तरह तैयार तो हो जाओ।

मीर साहब—वल्लाह है कि लल्लू की मा अगर दो-तीन दिन इसी सर्दी में इतने ही तड़के ईदगाह जाना पड़े तो मैं अकड़ कर रह जाऊँ।

पत्नी—हाँ हाँ, तुम ठीक कहते हो। अब कौन तुमसे सर खपाये ? तुम किसी तरह जल्दी से तैयार हो जाओ।

मीर साहब—अरे साहब, अब तैयारी में क्या देर है लिहाफ़ से तो निकल ही चुका हूँ।

पत्नी—मगर मैं तो तुम्हें घर से भी निकालना चाहती हूँ इस वक़्त।

मीर साहब—भई, इस वक़्त पर तो एक शेर याद आया है। लल्लू की मा आना ज़रा इधर—

निकलना खुल्द से आदम का सुनते आये थे लेकिन
बहुत सर्दी में अपने गर्म बिस्तर में से हम निकले

पत्नी—चलो हटो। क्या अच्छे मालूम हो रहे हैं इस वक़्त शेर सुनाते हुए। वह मासूम इस सर्दी में तड़के से नहा-धोकर तैयार खड़ा है और तुम हो कि किसी तरह जाने का नाम ही नहीं लेते।

मीर साहब—ऐं, यह तो सचमुच खड़ा हुआ बिसूर रहा है। अच्छा साहब मैं तैयार हो गया। समझो कि बिल्कुल तैयार हो गया।

[मीर साहब सर्दी में हाँपते-काँपते चले जाते हैं।]

पत्नी—[आवाज़ देती है] अरी गुलशन, ज़रा देख गुसलखाने में सब ठीक है। मियाँ नहाने जा रहे हैं।

मीर साहब—[लौटते हुए] नहीं साहब, नहा तो सकता ही नहीं इस वक़्त सिर्फ़ मुँह-हाथ धोने का इरादा है नहाना इस सर्दी में मेरे बस का नहीं।

पत्नी—फिर वही। तुम जा चुके ईदगाह। और ले जा चुके इसको।

मीर साहब—तो साहब, मैं कैसे इस वक़्त नहाकर जान दे दूँ ?

पत्नी—और बग़ैर नहाये मैं ईदगाह जाने न दूँगी। वाह यह भी कोई बात है।

मीर साहब—तो फिर इसके माने ये हुए कि ईदगाह जाना मुलतवी।

पत्नी—मगर तुम नहाओगे नहीं ?

मीर साहब—यह मैंने कब कहा, किससे कहा ? मेरा मतलब यह है कि मैं ईदगाह से वापस आकर नहा लूँगा। [गुलशन आती है।]

गुलशन—बीवी, तीसरी मरतबा ग़ुसलख़ाने में पानी रखा है। अब यह भी ठण्डा न हो जाये।

मीर साहब—तो मैं इस वक़्त जल्दी से मुँह-हाथ धोकर तैयार हो जाऊँ। आखिर तुम नहाने की ज़िद क्यों कर रही हो ?

पत्नी—और तुम्हें यह क्या ज़िद कि ईद के दिन भी न नहाओगे ?

मीर साहब—फिर वही ! अरे साहब मैं ज़िद नहीं कर रहा हूँ। बल्कि मजबूरी है, सर्दी तो देखो किस क़यामत की है। इस सर्दी में नहाना अरे तौबा ! तमाम जिस्म काँप रहा है।

लड़का—अब्बा मैं भी तो नहा लिया।

मीर साहब—अरे तेरा क्या है, तू तो पानी का कीड़ा है। हर हफ़्ते नहाता है। मगर मुझे तो इस वक़्त देर होगी। पहले कपड़े इस सर्दी में उतारूँ, फिर नहाने की हिम्मत करूँ। फिर तीन महीने का मैल छुड़ाऊँ। ना बाबा, मुझसे तो यह न होगा।

बीवी—तो साफ़ कह दो ना कि तुम न नहाओगे।

गुलशन—बीवी, पानी ठण्डा हो रहा है।

पत्नी—चूल्हे में गया पानी और भाड़ में गई तू।

गुलशन—ऐ वाह बीबी, बरस-बरस के दिन नौज मैं भाड़ में जाऊँ। आज तो ये कोसने न पड़ते।

मीर साहब—यानी सर्दी में भी भाड़ में जाना कोसना है ? मेरे दिल से पूछ कि मुझसे नहाने को कहा जा रहा है और मैं चुप हूँ ।

लड़का—अम्मा, ऊँह, उँह, उँह ।

पत्नी—क्या ठुन-ठुन लगा रखी है । तो क्या मैं तुझको लेकर घर से निकल जाऊँ ?

मीर साहब—अरे साहब, तो मैं कह तो रहा हूँ कि मुँह-हाथ धोकर कपड़े बदल लूँ और इसको लेकर ईदगाह चला जाऊँ ।

पत्नी—मैं तो कयामत तक बग़ैर तुम्हारे नहाये तुम्हारे साथ न जाने दूँगी ।

मीर साहब—भई वल्लाह है कि आजिज़ कर रही हो तुम । अरे साहब, नहाने के नाम से इस वक़्त मेरा दम निकल रहा है । मैंने तुमसे कह दिया कि मैं आकर जितना कहोगी नहालूँगा ।

पत्नी—खाने के बाद गरम मसाला फांकने वाले तुम्हारे ऐसे ही तो होते हैं ।

मीर साहब—क्या मतलब ? यानी तुम चाहती हो कि मैं नहा जरूर लूँ चाहे मेरा कुछ भी हाल हो ।

पत्नी—नहाओ या न नहाओ, अब मैं कुछ नहीं कहूँगी, सवेरे से भेजा खाली कर रखा है । रात को कैसी तैयारियाँ थीं और कलेजे में ठण्डक पड़ गई थी ।

[सड़क पर फ़क़ीरों की सदाएँ, सवारियों की चहल-पहल ।
लड़का खिड़की में से झाँकता है और कहता है ।]

लड़का—अभी तक लोग जा रहे हैं । उहँ, हुँह, उहँ ।

पत्नी—कैसा बिलख-बिलखकर मेरा बच्चा कह रहा है । गुलशन ज़रा बाहर जा और घसीटे से कह कि नन्हें मियाँ को ईदगाह ले जाये ।

गुलशन—बीबी, घसीटे तो बड़ी देर हुई ईदगाह चला भी गया ।

मीर साहब—चला गया, आख़िर इतनी जल्दी क्यों चला गया? यानी मैं नहीं गया और वह चला गया।

पत्नी—न जाता तो करता क्या? क्या तुम्हारे लिये वह भी नमाज छोड़ देता?

लड़का—[रोता है] घसीटे भी गया, ई-ई-ई।

पत्नी—रुला दिया ना, अब तो चैन पड़ा। ईद के दिन मासूम बच्चे के आँसू देख लिये। बस अब ख़ुश हुए होंगे।

मीर साहब—अच्छा लाओ मेरे कपड़े, मैं इसको लेकर अभी जाता हूँ।

पत्नी—मैं तो अब बग़ैर नहाये कपड़े भी न दूँगी।

मीर साहब—वल्लाह है कि यह ज़बरदस्ती है।

पत्नी—अब जो भी तुम समझो, मगर नहाये बग़ैर कपड़े न दूँगी चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाये।

मीर साहब—इस वक़्त पानी से नहाना वल्लाह है कि ख़ुदकशी है ख़ुदकशी। मगर जाता हूँ मैं ग़ुसलख़ाने में।

पत्नी—अगर नहाना है तो नहाओ जल्दी। पौने दस बजे हैं, दस बजे नमाज होती है ईदगाह में।

मीर साहब—जा तो रहा हूँ साहब, वल्लाह है कि सूली पर जाना है।

[मीर साहब बड़बड़ाते हुए चले जाते हैं और पत्नी बच्चे को समझाती है।]

पत्नी—बेटा, अब न रो। तुम देखो अभी वह नहाकर आयेंगे और तुमको ले जायेंगे। अभी तो देर है।

लड़का—अब्बा बड़ी देर में नहायेंगे।

मीर साहब—[ग़ुसलख़ाने ही से पुकार कर] अरे मैंने कहा लल्लू की माँ सुनतीं हो।

पत्नी—कहो क्या है, अब कोई नया शिगूफ़ा खिला ?

मीर साहब—मैंने कहा कि तुम्हारी क़सम हिम्मत नहीं हो रही है और मेरे लिए इस वक़्त नहाना बहुत मुश्किल है। कहो तो मुँह-हाथ धोकर आ जाऊँ ?

पत्नी—तौबा है, ख़ुदा न करे कि तुम्हारा ऐसा जिद्दी कोई गदुंवा हो।

मीर साहब—अरे साहब, ग़ौर तो करो कि पानी से नहाना है और कपड़े उतारकर नहाना है। मुझसे कपड़े ही नहीं उतर रहे है, नहाने का क्या जिक्र।

पत्नी—नाक में दम कर दिया। ईद क्या आई मेरे लिए अजाब बनकर आई। सवेरे से कुत्ते की तरह भौंक रही हूँ, मगर वही मुर्ग़े की एक टाँग।

मीर साहब—मैं पूछता हूँ कि आख़िर मुँह-हाथ धो लेने में क्या हर्ज है। तुम क्या मुँह-हाथ धोने को कुछ कम समझती हो ?

[गुलशन आती है।]

गुलशन—बीवी, देखिये सिवैयों को भून तो लिया है मगर क़िवाम में आप मिला दें।

पत्नी—चूल्हे में गईं मुई सिवैयाँ और भाड़ में गया क़िवाम !

गुलशन—ऐ है बीवी, मैंने कुछ कहा भी था आप-ही-आप गुस्सा आ रहा है ? बरस-बरस के दिन…।

पत्नी—जब मेरे बच्चे को ईद के दिन रुलाया गया है तो कैसी सिवैयाँ और कैसा कुछ।

गुलशन—ऐ बीवी तो क्या मैंने रुलाया है। मैंने तो एक बात पूछी थी और आप मुझ पर बरस पड़ीं।

पत्नी—ये त्योहार बच्चों के होते हैं ? कैसा सवेरे से ख़ुश-ख़ुश फिर रहा था और अब कैसा मेरा लाल रो रहा है !

लड़का—[रो रहा है] ऊँ-ऊँ-ऊँ, ईं-ईं-ईं।

[बाहर से घसीटे सलाम करता है ।]

घसीटे—बीवी, तसलीम !

बीवी—कौन ? घसीटे ।

घसीटे—जी हाँ, अल्लाह मुबारक करे यह बरस-बरस का दिन !

पत्नी—और आखिर तुम ग़ायब किधर हो गये थे ? नन्हें को ईदगाह भेजना था, वह बिलख-बिलख कर रह गया ।

घसीटे—बीबी, मैं तो ईदगाह ही गया था । बड़ी देर तक मियाँ का इन्तेज़ार किया, जब देर होने लगी तो चला गया ।

पत्नी—तो क्या नमाज़ हो गई ?

घसीटे—जी हाँ, वहीं से तो आ रहा हूँ ।

मीर साहब—[ग़ुसलखाने से] यह कौन है, क्या घसीटे है ?

गुलशन—जी हाँ मियाँ घसीटे है । ईदगाह से आया है नमाज़ पढ़ कर ।

मीर साहब—[ग़ुसलखाने से] अरे साहब, सुनती हो ? मैंने कहा अब तो नहाना यूँ भी बेकार ही है । अगर कहो तो निकल आऊँ अब ?

पत्नी—देखो जी मैंने कह दिया है कि अब तक तो मैं चुप रही, मगर अब जो तुम बोले तो सिर पीट लूँगी अपना । समझे कि नहीं ?

मीर साहब—[ग़ुसलखाने से निकलते हुए] अच्छा साहब मैं चुप—

गुस्सा है मेरे यार को जल तू जलाल तू
आई बला को ऐ मेरे अल्लाह टाल तू

पत्नी—हाँ-हाँ, बला कहो मुझको । मैं तो बला हूँ ही । मगर यह बला अब तुम्हारे सिर से टलने वाली नहीं है ।

मीर साहब—भई वल्लाह, यह भी एक ही रही । यानी किस नामाक़ूल ने तुमको बला कहा है ? तौबा करो लल्लू की माँ !

पत्नी—चलो रहने दो । अब इस लीप-पोत करने को । वह तो मैं

जानती हूँ कि तुम मुझको अपने सर की बला समझते हो। मगर मैं कहती हूँ कि आखिर इस मासूम का क्या क़ुसूर था जिसको आज बरस-बरस के दिन आठ-आठ आँसू रुलाया गया है। मेरे बच्चे का रोना तुमसे देखा कैसे गया······।

मीर साहब—अरे साहब, रोने ही की वजह से तो मैंने नहाने की हिम्मत कर ली थी। तुम्हारे सामने गुसलखाने तक गया। आखिर और मैं क्या करता ?

पत्नी—बस बस, मेरी जबान न खुलवाओ। तुमको ऐसा ही खयाल होता तो आज मेरा बच्चा हलकान न होता। फिर अगर मैंने कुछ कहा तो तुम कहोगे यह नहीं वह······।

घसीटे—अरे मियाँ तो आप ही चुप रहिये। ऐसा हो ही जाता है सरकार ! अल्लाह सलामती रखे हम दोनों का इनाम तो मिलना ही चाहिये।

पत्नी—चल दूर ! यहाँ ईद के दिन यह किलकिल हो रही है और तुझको पड़ी है अपने इनाम की। मेरा बच्चा ईद के दिन रोये और नौकर-चाकर खुशियाँ मनायें। मैं तो खैर जलने के लिए हूँही, मेरा क्या है। मगर मैं कहती हूँ कि इस मासूम ने आखिर क्या बिगाड़ा था किसी का। कल से कैसा खुश-खुश फिर रहा था और इस वक़्त कुम्हलाकर रह गया। अल्लाह रखे जिस बच्चे का बाप हो वह इस तरह कुढ़े।

गुलशन—नन्हें मियाँ को तो मैं मना लूँगी। मगर बीबी हम लोगों का इनाम तो सचमुच मिलना ही चाहिये।

पत्नी—देखो घसीटे और देखो गुलशन ! मैंने कह दिया है कि तुम दोनों मुझे सताओ नहीं। मेरे नथनों में तीर न करो, नहीं तो मुझसे बुरा कोई न होगा। वाह, जैसे सबने मिलकर मुझको पागल बना रखा है ! मैं रात ही को समझ रही थी कि यह उठ चुके सवेरे तड़के और जा चुके ईदगाह। इससे रात ही को इन्कार कर देते तो सब्र आ जाता।

मीर साहब—अब मैं इस वक़्त क्या कहूँ, तुमको तो है ग़ुस्सा।

पत्नी—ऐ और क्या, मेरा ग़ुस्सा तो बदनाम है ही, दुनिया जानती है कि मैं बदमिज़ाज हूँ। मगर तुम्हारी इन हरकतों को देखने कोई थोड़ी आता है। बरस-बरस के दिन तुमने जैसा बीवी-बच्चे को ख़ुश किया है उसको मेरा ही दिल जानता है।

मीर साहब—अच्छा साहब, मेरा ही .क़ुसूर सही। तुम उस वक़्त तक बके जाओगी जब तक मैं जाग रहा हूँ। मैं अपनी नींद पूरी करता हूँ, आज कच्ची नींद सोकर उठा हूँ। तमाम बदन टूट रहा है।

पत्नी—हाँ और क्या, तुम्हें दिन भर पड़े-पड़े ऐंठने के सिवा और काम ही क्या है। यह हमारे घर में ईद आई है। चाँद को देखकर तुम्हारी ही सूरत देखी थी ना ?

[मीर साहब हुक़्क़ा पी रहे हैं।]

पत्नी—दुनिया जहान में आज ख़ुशियाँ मनाई जा रही हैं और मेरी क़िस्मत में यह लिखा था कि सुबह से उठ कर कुत्तों की तरह भौंकूँ।

[हुक़्के की आवाज़]

पत्नी—ऐ मैं भौंकूँ भी तो उनको क्या परवा ? [पानदान खुलने की आवाज़] मेरे मुक़द्दर में आज के दिन भी यह सोख़्ती लिखी थी। [डली काटती हैं] दुनिया जहान ख़ुशी है, हरेक के घर में चहल-पहल है। [डली काटती हैं] तुम्हारे घर की तरह मक्खियाँ कहीं न भिनक रही होंगी। [डली काटती हैं।]

[मीर साहब हुक़्क़ा पी रहे हैं।]

पत्नी—मैं अपना सर खपा रही हूँ और तुम हो कि चुप, जैसे मैं दीवारों से कह रही हूँ। तुम्हारे कान पर जूँ तक नहीं रेंगी। [डली काट रही हैं।]

[मीर साहब हुक़्क़े का कश जोर से लगाते है।]

पत्नी—मुझको तुमने पागल समझ रखा है जो मैं चीख रही हूँ और तुम मट खेंचे पड़े हो।

[मीर साहब फिर हुक़्क़े का कश जोर से लेते हैं।]

पत्नी— सचमुच मै बेकार को मुँह थका रही हूँ। मालूम होता है जैसे तुम सुन ही नहीं रहे हो। ऐ तो न सुनो मेरी जूती को क्या ग़रज पड़ी है कि मैं अपना भेजा ख़ाली करूँ।

मीर साहब—हाँ, वह पान बन गये।

पत्नी—हाँ तुम्हारे ही लिए तो है पान। [पानदान गिराकर चली जाती है।]

मीर साहब—[गुनगुनाकर] तेरे तीरे-नीमकश को कोई मेरे दिल से पूछे······तेरे······तीर······नीमकश······कोई······मेरे दिल··· से ·····पूछे······ये······ख़लिश······ये खल······खा·········खा-खा-खा-खा।

[खर्राटे]